श्री महावीर जिन पूजा

(रचयिता-आचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज)

हे वर्धमान! अतिवीर वीर महावीर सन्मति मतिदायक
शिवपथ परिचायक, सुखदायक जय वर्तमान शासन नायक॥

तुम धीर-वीर हम हैं अधीर मम हरो पीर मुक्तिदायक।
भवसिंधु तीर दो कर्मवीर तुम सम हम बन जायें ज्ञायक॥

खुद जियो और जीने दो, यह संदेश देशना में आया।
निश्चय व्यवहार अहिंसा का सम्यक् पथ तुमने दिखलाया॥

इस पथ का राही बनना है, यह भाव सजा कर लाया हूँ।
आओ हृदयासन पर आओ, गुणपूजा करने आया हूँ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(परिपुष्पांजलिं क्षिपामि)

हूँ द्रव्यदृष्टि से जन्म रहित ऐसा प्रभु तुमने जाना था।
पर्यायदृष्टि से जन्म-मरण वस्तु में होता माना था॥
यह संसारी पर्याय मेरी नित जनम-मरण दुःख देती है।
निज द्रव्याश्रित पर्याय मिले, जो आतम सुख को देती है॥
जन्म जरा मृतु नाश हो, दो ऐसा वरदान।
जल से तव गुण पूजता, महावीर भगवान॥1॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चैतन्य जलधि के आश्रय से, तुमने भवताप मिटाया है।
भव-भव की पीड़ा को स्वामिन्, क्षणभर में आप नशाया है॥
हम भववारिधि के आश्रय से, संसार बढ़ाते आये हैं।
चैतन्यजलधि-भववारिधि का अन्तर यह समझ न पाये हैं॥
भववारिधि-चेतनजलधि भेदज्ञान से जान।
चन्दन ले गुण पूजता, महावीर भगवान॥2॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अखण्ड शुद्धातम जब निज पर्यायों में आता है।
तब सहज सिद्ध भगवानों सा अक्षय पद भी मिल जाता है॥
अक्षय पद की अब चाह मुझे, त्रयलोक पदों से अकुलाया।
सुन महिमा सुयश तुम्हारा प्रभु, अक्षत भावों को भर लाया॥
आत्मज्ञान से अब हुआ, अक्षय पद का भान।
अक्षत ले गुण पूजता, महावीर भगवान॥3॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

निष्काम आत्मा के आश्रित, निश्चय ब्रह्मचर्य प्रगटता है।
पर से उपयोग स्वयं हटता, निज में उपयोग सिमटता है॥

कामादिक भावों के कारण, आकुलता अब तक पाई है।
सब काम भाव विध्वंस करुँ, मन में अब यही समाई है॥
ब्रह्मचर्य से हो सहज, कामभाव अवसान।
पुष्प लिये गुण पूजता, महावीर भगवान॥4॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

हो चिदानन्द आश्रित तुमने, निज चिदानन्द रसपान किया।
न क्षुधा रोग छू सका तुम्हैं, ऐसा पुरुषार्थ महान किया॥
मिष्ठान्न व्यंजनों से अब तक, मैं क्षुधा मिटाता आया हूँ।
चेतन का उत्तम उपशम रस, हे नाथ! लुटाता आया हूँ॥
क्षुधा रोग का नाश हो, जो सब दुःख की खान।
गुण पूजूँ नैवेद्य ले, महावीर भगवान॥5॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

जब तुम चैतन्य प्रकाश किया, मोहान्धकार का नाश हुआ।
जिस मोह कर्म के कारण ही, चेतन पुद्गल का दास हुआ॥
हम भी यह मोह तिमिर स्वामिन्!, अब आज हटाने आये हैं।
चेतन प्रकाश उजियाला हो, यह भाव हृदय में लाये हैं॥
दर्शन चारित मोह को नाशूँ कर निज ध्यान।
दीपक ले गुण पूजता, महावीर भगवान॥6॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

आठों कर्मों के कारण ही, चारों गति में भरमाया हूँ।
निज वैभाविक परिणति से प्रभु, क्लेशित हूँ बहुत सताया हूँ॥
आश्रित हो ज्ञान चेतना के आठों कर्मों को दहकाया।
मैं भी ऐसा पुरुषार्थ करुँ, इसलिए नाथ चरणों आया॥
अष्टकर्म दहकाउँगा, कर शुद्धातम ध्यान।
धूप लिये गुण पूजता, महावीर भगवान॥7॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

शाश्वत शिवफल को पा तुमने, निष्फल जग को ठुकराया है।
व्यवहार और निश्चय पथ को, मुक्ति का साधन गाया है॥
हे नाथ! इसी पथ पर चलकर, मैं भी मुक्तिफल पाऊँगा।
तुम सम अरिहन्त दशा पाकर, सिद्धत्व अवस्था पाऊँगा॥
सच्चाफल शिवफल अहा, निज अनुभूति प्रधान।
फल ले तव गुण पूजता, महावीर भगवान॥8॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु, शुभ दीप धूप फल लाया हूँ।
आठों द्रव्यों का अर्घ्य बना, मैं कनकथाल भर लाया हूँ॥
दैदीप्य अर्घ अर्पित करता, स्वामिन् अनर्घ्यपद पाने को।
निर्दोष आत्मा पाना है, आया हूँ दोष मिटाने को॥
इक अनर्घ्यपद चाहता शुद्ध स्वरूप समान।
अर्घ्य लिये गुण पूजता, महावीर भगवान॥9॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

आषाढ़ शुक्ल षष्ठी गर्भ में प्रभु आये।
सुरपति - सुर - गर्भोत्सव मनाकर हर्षाये।।
त्रिशला उर में रहते मोती ज्यों सीप बसा।
हम पूजैं प्रभु भावी अहा अरिहंत दशा।।

ॐ ह्रीं आषाढ़-शुक्ला-षष्ठ्यां गर्भावतरण-मंगल-मंडिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

सित तेरस चैत महान तुमने जन्म लिया।
सिद्धार्थ पिता घर द्वार तुमने धन्य किया॥
कुण्डलपुर जन्मोत्सव मनाता इन्द्र लसा।
हम पूजैं प्रभु भावी अहा अरिहंत दशा॥

ॐ ह्रीं चैत्र-शुक्ला-त्रयोदश्यां जन्म-मंगल-मंडिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

मंगसिर कृष्णा दसमी तुमने तप धारा।
थी तीस वर्ष आयु तजा घर-परिवारा॥
तप कल्याणक पूजा देव करते हर्षा।
हम पूजैं तप के साथ अहा अरिहंत दशा॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णादशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

वैशाख शुक्ल दसमी, घाति क्षय कर डाला।
प्रभु प्रगटा केवलज्ञान फैला उजियाला॥
चौथा कल्याणक देव पूजैं अति हर्षा।
हम पूजैं प्रभु तेरी अहा अरिहंत दशा॥

ॐ ह्रीं वैशाख-शुक्ला-दशम्यां ज्ञानकल्याणक-प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

कार्तिक कृष्णामावश मुक्ति को पाया।
पावापुर हुआ पवित्र, तीरथ कहलाया॥
प्रभु कल्याणक निर्वाण पूजैं सुर हर्षा।
हम पूजैं धरि शुभ भाव प्रभु निर्वाण दशा॥

ॐ ह्रीं कार्तिक-कृष्णा-अमावस्यां मोक्ष मंगल मंडिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

जयमाला

जय त्रिशलानन्दन वीर प्रभो!, सिद्धार्थ तनय महावीर प्रभो!।
जय भवसागर के तीर प्रभो!, जय गुणसागर अतिवीर प्रभो॥

तुम कुण्डलपुर में जन्म लिया, देवों ने उत्सव खूब किया।
होती थी रत्नों की वर्षा, हर जन-जन था हर्षा-हर्षा॥

सुर नर किन्नर गुण गाते थे, हर्षाते मोद मनाते थे।
वीणा सारंगी ढोल वाद्य बजते थे नृत्य दिखाते थे॥

झननं झननं झंकार सजे, घननं घननं घनघंट बजे।

तननं तननं ततता विततता, छननं छननं अतता सुगता॥
धृगतां धृगतां धृगतां धृगतां, दृगतां दृगतां दृगतां दृगतां।
ताथेई ताथेई सुर चाल चलें, चटपट अटपट नभ में उछलें॥
फिर झुक-झुक जय-जयकार करें, स्तुति गा हर्ष अपार धरें।
सब ही प्रभु तुमको ध्याते थे, अपना कल्याण मनाते थे॥
जब तीस वर्ष में तप धारा, तज दिया मोह घर-परिवारा।
न रोक सकी माँ की ममता, प्रगटी अन्तस में दृढ़ समता॥
उपसर्ग न तुमको डिगा सके, भय के अंकुर न उगा सके।
परिषह समता से सहते थे, मुख से कुछ भी न कहते थे॥
चन्दनबाला को तार दिया, जाकर द्वारे आहार लिया।
बारह वर्षों तप ध्यान किया, निज चिदानन्द रसपान किया॥
चउ कर्म प्रकृति त्रेसठ नाशी, पाई केवलनिधि अविनाशी।
तुम आचारांग प्रथम गाया, खुद जियो जीने दो बतलाया॥
आतम-अनात्म का ज्ञान करो, निर्णय कर लो श्रद्धान करो।
सुन दिव्यध्वनि भवि हर्षाये, व्रत संयम के उत्सव छाये॥
कोई धर्मध्यान में लीन हुये, कोई शुक्लध्यान प्रवीण हुये।
प्रभुजी तुमने उपकार किया, भव्यों को भव से तार दिया॥
थी कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी, तब योग निरोध किया प्रभुजी।
फिर अंतिम शुक्लध्यान छुआ, पावापुर से निर्वाण हुआ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरपति श्री पद पूजते, मन वच काय त्रियोग।
मम 'विमर्श' चरणों यही, मिटे कर्म संयोग॥

(परिपुष्पांजलिं क्षिपामि)